जिजीविषा

प्रवीण भट्ट 'यायावर'[1]

जिजीविषाएं जीवित रखेंगी हमें,

हममें , हमारे आने वालों में,

विचार और सृजन से,

जब तक हम

नष्ट न हों

भौतिक रूप में.....

नष्ट होकर भी

अमर रहेंगी

हमारी जिजीविषा

हमारे विचारों में

वो हथियार बनेंगी

आने वालों के मस्तिष्कों का....

*****

[1] सहायक प्राध्यापक, विभाग प्रभारी, हिन्दी विभाग, रामचंद्र उनियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उत्तरकाशी, उत्तराखंड, (भारत)